प्रस्तावना

सफर शहर – ए –बनारस तथा पटना का......

“हजार मील का सफर भी एक अलग ही सुंदर अनुभव होता है I हम भारत में रहते है और भारत के बारें में जानना हमारा हक्क है I समस्त भारत का इतिहास बहुत ही प्राचीन तथा व्यापक है I हर भाषा के साहित्य में अपनी एक विशिष्ट संस्कृति छुपी हुई होती है और यही संस्कृति अपने देश,अपने राज्य को एकता में बांधने का काम करती है I यात्रा करने पर हम प्रत्यक्ष उन जगहों पर जाकर गहराई से उसके बारें में जानकारी ग्रहण कर पाते है I हिन्दी भाषा तथा साहित्य को अगर हम पढ़ते है तो हिन्दी प्रदेशों में भ्रमण करना अनिवार्य बन जाता है और यही इस भ्रमण यात्रा का उद्देश्य था I

हमारे स्नातकोत्तर वर्ष के पाठयक्रम में ‘हिन्दी प्रदेशों में भ्रमण” यह विषय लगाया गया था I हमारे समक्ष प्रस्तुत भ्रमण में जाने के लिए चार जगह उपलब्ध थे जैसे काशी,हस्तीनापूर,अयोध्या,मगध जो हमारे हिन्दी साहित्य के इतिहास में आते है I हमने इनमें काशी जाना उचित समझा I मैंने जैसे ही भ्रमण नामक विषय का नाम सुन तभी मेरे मन- मस्तिष्क में ट्रेन की सीटी गूँजने लगी थी I शायद ही मैं गलत ना हो तो हमारी कक्षा से सिर्फ मैं अकेली सर्वप्रथम भ्रमण इस विषय को चुनने के लिए तैयार थी I जैसे – जैसे समय बीतता गया वैसे वैसे मेरे बाकी के सहपाठी भी तैयार हो गये I सभी लोग भ्रमण पर जाने के लिए बेहद उत्सुक थे I

हिन्दू धर्म में ‘काशी’ को लेकर कई सारी धारणायें है I एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थान जिसका अट्ट महत्व है I बचपन से लेकर आज तक मैंने बनारस शहर के बारें में बहुत कुछ सुन और पढ़ा था तो इस शहर को देखने के लिए मैं बहुत दिलचस्त थी I हम सभी का ध्यान बस बनारस की गलियों,मंदिरों में बस गया था I हर दिन सिर्फ बनारस का नजारा मेरी ऑखो के सामने आता रहता I विभाग की ओर से यह पहली ही भ्रमण यात्रा थी इसलिए हमें तिकट बुक करवाते समय बहुत तकलीफों का सामना करना पड़ा I कई बार तो ऐसा भी लगा कि शायद हम बनारस नहीं जा सकेंगे लेकिन वो कहते है ना “जहॉ

चाह है,वहॉं राह हैं" तो बस वहीं हमारे साथ हुआ । हमारे विभाग के शिक्षक और कुछ छात्रों ने कठिनाइयों पर मात करते हुए तिकट बुक करवा ही ली ।

यात्रा पर जाने से पहले हमारे 'आय . एस . ए' रखे थे,लेकिन हमारे मन – मस्तिष्क में बस बनारस ने घर कर रखा था । कैसे – वैसे हमने 'आय . एस . ए' दिये और हम **7** फरवरी **2020** को महीनों से पनप रहें ख्वाबों को हकीकत में जीने के लिए निकल पड़े।

7 फरवरी 2020 का पहला दिन था तो हम सब अपने अपने नजदीकी रेलवे स्टेशन पर सुबह समय पर पहुँच गये। थिविम रेलवे स्टेशन पहुँचते ही बहुत उत्साह तथा रोमांच का अनुभव हो रहा था क्योंकि,पूरे दो वर्षो के बाद मैं एक बार फिर से इतनी दूर की यात्रा का आनंद उठाने जा रही थी।

गोवा से मुंबई तक का सफर **12** घंटों का था। हम कुल मिलाकर **55** लोग थे,जिनमें से **3** शिक्षक थे। करिब **9.15** को मडगांव स्टेशन से विभाग के आधे लोग 'मांडवी एक्सप्रेस' नामक रेल पर चढ़ गये। थिविम स्टेशन तक आते **10:15** बज चुके थे। इतने महिनों का सपना जो मन में पनप रहा था वो आखिरकर हकीकत में जीने के लिए हम बनारस की यात्रा पर निकल पड़े। हमारी संख्या **55** होने के कारण सभी सीटें आरक्षित नहीं हो चुकी थी इसलिए हम सब को अलग – अलग कंपार्टमेंट में जाकर बैठना पड़ा।

थिविम रेल्वे स्टेशन

रेल चलने लगी और जल्द ही रफ्तार पकड़ ली । सब एक दूसरे को मिल रहे थे,कुछ लोग हँसी मजाक कर रहे थे तो कुछ लोग स्पीकर लगाकर गाने सुन रहे थे । मैं और मेरी कुछ सहेलियाँ ऐसे ही बैठे थे तो हमने अंताक्षरी खेलना प्रारंभ किया । धीरे – धीरे हमारे साथ बाकी लोगों के साथ शिक्षक भी जुड़ गये । हमारे कंपार्टमेंट में हँसी मजाक का माहौल छाया हुआ था । जो भी कोई वहाँ से गुजरता वो हमें देखकर खुश होता था । कुछ समय ऐसे ही बिता,धीरे – धीरे हम हरे भरे खेतों से गुज़र रहे थे । चारों तरफ हरियाली छाई हुयी थी । पेड़,छोटे-मोटे मकान पीछे की ओर भागते हुए दिखाई दे रहे थे। यह पूरा नजारा मन को आकर्षित कर रहा था । पिछली रात को देर से सोने के कारण मुझे नींद आ रही थी और कब मेरी आँख लग गयी मुझे पता ही नहीं चला ।

दोपहर के 2 बज रहे थे तो किसी ने मुझे जगाते हुए कहा, 'चलो उठो,खाना खाते है '। सभी ने अपने – अपने घर से यानि कि बारदेस से लेकर काणकोण तक के हर एक कोने से बढ़ियाँ – बढ़ियाँ स्वादिष्ट खाना लाया था । सभी ने एक दूसरें के साथ बांटकर खाने का मजा लिया । 3 – 3 ः 30 बज रहे थे और अभी दादर तक का सफर बहुत लंबा था करीब 6 – 7 घंटों का था । भरपेट खाना खाने की वजह से ज्यादातर लोग सो गये थे । मैं और मेरे कुछ दोस्त बैठे – बैठे बातें कर रहे थे । कोई अपने पहले के यात्रा के अनुभव सुन रहा था,कोई इस यात्रा पर जाने की तैयारी के बारें में बता रहा था ।

शाम के करीबन 6ः00 बज रहे थे,हम सब ने गरम गरम चाय पी । धीरे – धीरे जो लोग सो गये थे वो भी उठ गये । दादर स्टेशन नजदीक आ रहा था करीब दो घंटो में हम पहुँचने वाले थे । अब रेल में पहले से ज्यादा लोग दिखाई दे रहे थे जो दादर तक जाने वाले थे क्योंकि उस रेल का आखरी स्टेशन दादर मुंबई तक ही था । रेल जिस भी स्टेशन पर रूकती वहाँ बहुत भीड़ दिखाई देती थी क्योंकि एक तो शाम का समय और दूसरी वहाँ की आबादी । लोग एक ट्रेन से उतरकर अगली ट्रेन से उतरकर अगली टेन पकड़ने दौडने दिखाई देते थे ।

धीरे – धीरे अंधेरा हो रहा था और उस अंधेरे में मुंबई नगरी एकदम सुनहरी लग रही थी । उँची - उँची इमारतें चमक रही थी और वह नजारा मेरी आँखो को लुभा रहा था । हम सब बहुत खुश थे,सबके चेहरे एकदम से खिल उठे थे 8 बज रहे और करिब 1 घंटे में हम दादर पहुँचने वाले थे तो हमारी विभागाध्याक्षा ने हमें खाना खाकर तैयार रहने को कहा । हम सब ने दोपहर का जो खाना बचा था वही या लिया । हम अपने सफर के पहले पडाव पर जल्द ही पहुँचने वाले थे । वैसे देखा जाये तो इससे पहले मैं कई बार सिर्फ रेल से ही मुंबई से गुजरी थी पर कभी उस महानगरी को प्रत्यक्ष देखने का मौका नहीं मिला था । बचपन से जो सपना देखा तो वो आखिरकर हकिकत में उतरने वाला था । सभी अपने – अपने बॅग लेकर उतरने के लिए तैयार हो गये । बाहर का सुनहरा नजारा देखते – देखते कब हम अपने सफर के पहले पडाव पर पहुँच गये पता ही नहीं चला । मुंबई की जमीन पर जैसे ही पहला कदम रखा मन को सुकून पहुँचा । तकरीबन 9ः00 बजे के आसपास हम दादर स्टेशन पहुँचे और सभी एक जगह पर इकट्ठा हो गये।

वहाँ से अब हमें ‘लोकल ट्रेन’ पकड़कर ‘लोकमान्य तिलक टर्मिनस’ स्टेशन पर जाना था। ज्यादात्तर लोग पहली बार लोकल ट्रेन में सफर करने वाले थे तो हमारे लिए यह एक नया अनुभव रहने वाला था । एक तो सबके बॅग भारी थे और उसी के साथ उस 10 – 12 सेकंड में लोकल ट्रेन में चढ़ना हमारे सामने एक चुनौती थी । मुंबई की उस भीड़ में यह बहुत कठिन लग रहा था लेकिन ट्रेन आने पर सभी जब हम कुर्ला पहुँच गये तो हमें पता चला की हमारी विभागाध्याक्षा वृषाली मॅडम और अन्य 2 लड़कियाँ पीछे रह गये तो अगली ट्रेन पकड़कर वो भी पहुँच गये ।वहाँ से चलकर हम ‘लोकमान्य तिलक टमिनस’स्टेशन पहुँच गये ।

1 बजे के आसपास हम सब अंदर जाकर बैठ गये । हमारी अगली ट्रेन अगले दिन दोपहर के 12ः00 बजे थी तो हमें पूरी रात वही बैठकर प्रतिक्षा करनी पड़ी । पूरे 12 घंटे सफर करने के बाद सभी थक चुके थे और वहाँ भीड़ होने के कारण यहाँ वहाँ बैठने के लिए जगह ढूँढ रहे थे । हम सबको जोरो की नींद आ रही थी लेकिन अपना अपना बॅग भी सँभालना था । कुछ समय ऐसे ही बिता अचानक रात के 3ः00 बजे वहाँ पर मौजूद

पुलिस कुर्सियों पर डंडे मारकर सबको जगाने लगी l इस बात से हम सब चीड़ गये थे क्योंकि सब थके हुए थे l वहॉ पर मौजूद लोगों व्दारा पता चला की ऐसे भीड़ - भाड़ वाले स्टेशनों पर अक्सर चोरियॉ होती है तो इसके कारण पुलिस लोगों को सचेत रहने के लिए जगा रही थी l उसके तुरंत वहॉ परए क औरत आयी जो मानसिक रूप से पिड़ित थी वो जोर – जोर से चिल्ला रही थी,हॅस रही थी l वो पूरी रात हमें बड़े कठिनाई से वही पर गुजारनी पड़ी l

मैं,वृक्षाली मैडम और मेग्दालीन मैडम 8 और 9 फरवरी 2020 सुबह 7 बजे के करिब हमने हाथ मुॅह धोकर नाश्ता किया l 1 बजे के हमारी ट्रेन थी तो हम सब ऐसे ही बैठे बैठे इंतजार कर रहे थे l पूरी रात ठीक से आराम न करने के कारण मैं बहुत थकान महसूस कर रही थी तो स्टेशन पर मौजूद प्रतीक्षालय में जाकर नाहा –धोकर आयें अब जाकर थोडा अच्छा महसूस हो रहा था l

दोपहर 1 बजे की वाराणसी एक्सप्रेस में बैठकर हम शहर – ए –बनारस जाने निकल पड़े l अगले दिन रात के 7 . 00 से 8 . 00 बजे के आसपास हम बनारस पहॅुचने वाले थे यानि की पूरी एक दिन हमे रेल में निकालना था l पूरी रात का जागरण और सुबह ठिक से नाश्ता न करने के कारण ज्यादात्तर लोग खाना खाकर से गये l करिब 7 – 8 बजे के आसपास सब उठ चुके थे l ज्यादातर लोग अपने – अपने मोबाइल फोन में व्यस्त थे लेकिन मैं और मेरी 4 -5 सहेलियॉ और दोनो शिक्षिकाऍ साथ बैठे थे तो हमने अंताक्षरी खेलना शुरू किया l इसके बाद हमने खाना खाया और हम ऐसे ही बातें करते बैठ गयेl दोपहर में अच्छी नींद लेने के कारण अब हमे नींद नहीं आ रही थी तो हमने सोचा कुछ नये खेल खेलते है l इतने में किसी ने 'DUMB CHARGES' खेलने का प्रस्ताव रखा तो यह सुनकर सब तैयार हो गये l देर रात तक खेलते रहे और फिर हम सो गये l रात को बड़ा ठंड होने के कारण सब इधर करवटें बदल रहे थे l मैंने सोने की बहुत कोशिश की लेकिन. मैं ठंड के मारे ठिक से नहीं सो पा रही थी l बहुत देर समय ऐसे ही बितता गया और कब मेरी ऑख लग गयी मुझे पता ही नहीं चला l

सुबह हो चुकी थी और सभी लोग उठ चुके थे लेकिन मैं अकेली देर तक सोती रही I मेरी एक सहेली ने मुझे जगाया I उन्होंने पहले से ही नाश्ता लाकर तैयार रखा था I सुबह की ताजी हवाएँ बता रही थी कि मध्यप्रदेश का मौसम खुशनुमा है I ब्रश इत्यादि करके मैं वापस कैबिन लौटी I सबने मिलकर गरम गरम समोसों का मजा लिया I बनारस पहुँचने के लिए 10 घटों का समय बचा था I सब बातें करते,हँसते खेलते सफर का मजा ले रहे थे I दोपहर का खाना हुआ और कुछ लोग सो गये I

अब हम हमारे तीसरे पड़ाव के बहुत नजदीक आ रहे थे I शाम के 4 . 00 बज रहे थे और हम उत्तरप्रदेश में प्रवेश कर चुके थे I इस क्षेत्र की बड़ी विशेषता इसकी अपनी खेती बाड़ी,रास्ते में हर आधे किमी परए क नाला,छोटी नदी व रास्ते भर जल स्त्रोत के दर्शन सुखद लग रहे थे I जैसे ही हम इलाहाबाद पहुँचते तो यह नजारा और भी गहरा बनता गया I इनमें उछलकूद करते बच्चे,कपड़े धोती महिलाएँ,स्नान करते लोग और पत्थर तोड़ते लोगों को देख प्रवाहमान लोकजीवन की एक जीवन अनुभूति हुई I इसी के साथ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' व्दारा लिखित 'वह तोड़ती पत्थर' कविता ऑखो के सामने छाने लगी I

धीरे –धीरे अँधेरा हो रहा था और हम करिब 7 . 30 बजे के आसपास वाराणसी स्टेशन पहुँच गये I स्टेशन पर बहुत भीड़ थी I उस भागम – भाग को देखकर हम सब हतप्रभ हो रहे थे I लग रहा था,जैसे यहॉ रेलों कि प्रदर्शनी या मेला लगा हुआ है,एक रेल आ रही थी तो दूसरी रेल प्रस्थान के लिए तैयार थी I वहॉ से हमें पैराडाइस हॉटेल जाने के लिए गाडीयों का इंतजाम करवाया गया था तो हम सब हॉटेल के लिए रवाना हो गये I

जैसे ही हम हॉटेल जाने निकल पड़े,रात का समय था तो रास्ते में बहुत भीड़ थी I उस शहर का नजारा ही एकदम अलग था I सबसे पहले हमें रास्ते में एक शव को लेकर जाते कुछ लोग दिखाई दिये I तुरंत पूरे रीति –रिवाजों के साथ दूल्हा घोड़े पर बैठकर अपने घर से बारात लेकर दुल्हन के घर जाता दिखाई दिया I यह सबकुछ हमने पहली बार देखा था,पूरे बैंड बाजे के लोग जोरों – शोरो से नाच रहे थे I ऐसी ही 5 – 6 बारातों का नजारा हमने रास्तेभर देखा I

हम हॉटल पहुँच गये । हॉटल वालों से हमें अच्छी सेवा मिली । 3 लोगों को एक कमरा दिया था,उसमें ए . सी,टीव्ही,गर्म पानी की अच्छी सुविधाए थी । हमारे कमरों में खाना पहुँचा दिया गया था । हम सबने नहा – धोकर खाना खाया और हम सो गये ।

10 फरवरी 2020

भ्रमण यात्रा का यह पहला दिन था और हम बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय देखने जाने वाले थे । हम सुबह जल्दी उठकर तैयार हो गये । नाश्ता देर से मिलने के कारण हमें थोड़ी देर हो चुकी थी । हॉटल से हम पैदल गये थे क्यों कि वह हॉटल से बहुत ही नजदिक था । जैसे ही हम वहाँ पहुँचे हमने विशाल सा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय का मुख्य व्दार देखा । सब तस्वीरें ले रहे थे और हम अंदर जाने के लिए अधिक उतावले हो रहे थे ।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एक केंद्रिय विश्वविद्यालय है जिसे ' बी . एच . यू' भी कहा जाता है । इसकी स्थापना 4 जनवरी 1916 महामना पंडित मदन. मोहन मालवीय व्दारा हुई थी । विश्वविद्यालय को "राष्ट्रीय महत्व का संस्थान" का दर्जा प्राप्त है । मुख परिसर 1300 एकड़ वाराणसी में स्थिति है जिसकी भूमि काशी नरेश ने दान की थी । मुख्य परिसर में 6 संस्थान 14 संकाय और लगभग 140 विभाग जैसे महिला कॉलेज,इंस्टीटयूट ऑफ टेक्नोलॉजी,इंस्टीटूयट ऑफ मेडिकल साइंसेस,कृषि संकाय आदि । इसके साथ छह विषयों के एडवांस्ड स्टडी सेंटर भी है । 75 छात्र वासियों के साथ यहाँ एशिया का सबसे

बड़ा रिहायशी विश्वविद्यालय है,करिब **30000** से ज्यादा छात्र अध्यनगर है,लगभग **34** देशों से आए हुए है l विश्वविद्यालय के परिसर विश्वनाथ का बहुत बड़ा तथा सुंदर मंदिर भी है l

सबसे पहले हमने वहॉ के हर एक छोटे – मोटे संकाय तथा विभाग देखे l फिर हम हिन्दी विभाग में गये जो कि हमारा मुख्य लक्ष्य था l वहॅा के विभागाध्यक्ष प्रो आर .के .सराक से तो हम नहीं मिल पाये पर विभाग के एक अध्यापक डॉ.शाही जी से हमारी बातचीत हुई l विभाग के एक कक्षा में हम सब जाकर बैठ गये तभी डॉ.शाही जी ने आकर हमारा स्वागत किया l वो अपनी क्लास बीच में ही छोडकर आये थे l उन्होंने ‘ईदगाह’ कहानी को एक अलग ही रूप में हमारे सामने रखा और उसी के साथ संत कबीर जी का ‘मोको कहां ढूंढे बंदे’ इस पद पर भी अपने विचार प्रस्तुत किये l यह हमारे लिए बहुत ही लाभदायक अनुभव था l

हिन्दी विभाग

इसके तुरंत हम विभाग के पुस्तकालय गये l वहॉं पर सभी पुस्तकें उपलब्ध थी l बड़ा सा कमरा पुस्तकों से भरा हुआ सबका आकर्षण खींच रहा था l हमने वहॉं कुछ पुस्तकों को जॉचा और हम वहॉं से निकल गये l चलते चलते हमने वहॉं के अन्य विभागों को सिर्फ बाहर से ही देखा जैसे विज्ञान विभाग,अंग्रेजी विभाग,राजनीतिक तथा सामाजिक आदि l फिर हम केंद्रिय पुस्तकालय गये l केंद्रिय पुस्तकालय की सरचना एक विशाल थी l वहॉं पर काम करने के लिए कई सारे लोग थे और उसी के पुस्तकालय की सही

ढंग से देखबाल करने के लिए भी कई सारे लोग थे । हमें 10 – 12 लोगों का समूह बनाकर अंदर लेकर गये । चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था । हमने जैसे ही प्रवेश किया हम सब हक्का – बक्का रह गये क्योंकि उस पुस्तकालय की संरचना एकदम अलग थी। चारों तरफ अलग – अलग किताबें,हमें हिन्दी की सबसे पुरानी किताबें दिखाई और फिर हम बाहर आये । बाहर ठीक पुस्तकालय के सामने सुंदर बगीचा था । विश्वविद्यालय कई सारे बच्चे वहाॅ बैठकर पढते दिखाई दिये । हमने फोटोसे खीची और हम वहाॅ से निकल पड़े ।

दोपहर के 1 . 30 बज रहे थे तो हम सबसे वही पर खाना खाया और करीब 3 . 00 बजे के हम विश्वनाथ मंदिर दर्शन लेने गये । बड़ा सा मंदिर और मंदिर के परिसर में कई सारे लोगों को देख हम खुश हो गये । यह मंदिर वाराणसी के प्रसिध्द मंदिरों में से एक माना जाता है । वहाॅ से हम 'कला भवन' देखने निकल पड़े । जैसे ही हम वहा पहुॅचे तो हमें पता चला की 4 . 30 बजे वह बंद हो जाता है तो हमें उस समय अंदर जाने को नहीं मिलेगा तो हम सब निराश होकर लौट गये । रास्ते में हमारे विभागाध्यक्षा ने बताया कि 'राजकमल प्रकाशन' की एक पुस्तक प्रदर्शनी लगी हुई है,तो हम सब वहाॅ गये ।बहुत बड़ा प्रदर्शन लगा हुआ था । हर एक विधा की पुस्तके वहाॅ पर भी,हम सबने ढेर सारी पुस्तके खरिदी मैंने कुल मिलाकर 12 पुस्तके खरिदी । हम सब बहुत खुश थे क्योंकि हमें अच्छे दाम में पुस्तकें मिली थी । हम पुस्तके खरिदने के बाद हम सीधा हॉटल जाने मिली गये । जैसे ही हम विश्वविद्यालय के मुख्य व्दार से बाहर निकल तो शाम का समय होने के कारण रास्तें पर पूरी भीड़ थी । हम उस भीड़ में से रास्ता निकलते हुए चाय पीने एक कुल्हड चाय के ठेले पर रूॅक गये ।उस दिन मैंने कुल्हड़ चाय का पहली बार आस्वाद लिया जो मुझे बेहद पसंद आया । एक तो अंधेरा हो रहा था और उपर से हमे रात के खाने का भी इंतजाम करना था तो मैं मेरे व्दितीय वर्ष के दोस्तों के साथ खाना लाने एक छोटे से हॉटल पर गये । अंनजान शहर होने के कारण मिस ने हमें उनके साथ जाने कहा था ।लड़कियों के लिए वहाॅ पर अकेले घूमना आसान नहीं है । खाना लेकर वापस हॉटल पहुॅचते बाकी सब लोगों अस्सी घाट पर गंगा पूजा के लिए जाने निकल चुके थे । अस्सी घाट बहुत नजदीक था तो हमने सोचा कि हम भी जायेंगे लेकिन मेरी एक सहेली ने फोन

करके बताया कि आरती खत्म हो चुकी थी । हम अपने –अपने कमरे में लौटे नहा – धोकर खाना खाकर सो गये ।

11 फरवरी 2020

हररोज की तरह हम सुबह जल्दी उठकर तैयार हो गये । सबसे पहले हम सारनाथ जाने वाले थे तो हम गाडियो में बैठकर निकल पड़े । सारनाथ वाराणसी से 13 किलो मीटर की दूरी पर था । गौतम बुध्द ने अपना पहला धर्म उपदेश वही दिया था । यह स्थान बौध्द तथा जैन धर्म से जुडा हुआ है । बौध्द धर्म के प्रमुख तिर्थो में से सीधे गौतम बुध्द की विशाल प्रतिमा दिखाई दी । आसपास सुंदर सुंदर फूलों से भरा हुआ बगीचा है । सबने खूब फोटो निकाले और हम बाजू के एक मंदिर में गये वहाॅ पर बुध्दा की सुनहरी मूर्ति थी जो बहुत सुंदर दिखाई दे रही थी ।

सारनाथ

प्रवेश व्दार से बाहर निकलने समय वहाॅ मौजूद कुछ सामान बैच रहे थे तो सबने कुछ ना कुछ खरिददारी की और वहाॅ से साड़ी कारखाने निकल गये । हमने उस कारखाने में जैसे ही प्रवेश किया तो हमने कुछ बुजुर्गो को हाथ से साड़ी बनाते देखा ।

साड़ी कारखाना

ऐसा नजारा मैंने इससे पहले देखा था तो मुझे उतना आश्चर्य नहीं हुआ । वहॉ पर हमने अलग – अलग प्रकार की साडियॉ,छोटे –मोटे बॅग,दुप्पटा आदि देखा । सारी चीजे बहुत मॅहगी होने के कारण हम बिना खरिददारी किये वहॉ से निकल गये ।

इसके बाद अगला स्थान लमही था । लमही हिंदी साहित्य के विख्यात लेखक प्रेमचंद जी का जन्मस्थान है । इसी गांव में रहकर उन्होंने अपने लेखन कार्य की शुरूवात की थी । जैसे ही हम वहॉ पहॅुचे तो हमने उनकी याद में बनाया हुआ स्मारक देखा । स्मारक के बाए तरफ छोटा सा पुस्तकालय था । वहॉ हमारी मुलाकात श्री . सुरेशचंद दुबे जी से हुई । उन्होंने बड़ी अच्छी तरफ हमारा स्वागत करते हुए प्रेमचंद जी के संघर्ष के बारें में बताया और हमारा मार्गदर्शन किया । फिर हम उस पुस्तकालय में गये जहॉ पर उनकी कुछ तस्वीरे थी । उसी पुस्तकालय पीछे उनका छोटा सा घर था । हम सब वहॉ गये,पूरा घर देख लिया और हम वहॉ से कबीर जी की जन्म भूमि लहरतारा जाने के लिए निकल पड़े।

दोपहर के करिब **2 . 00 – 2 . 30** बज रहे थे। लहरतारा में कबीर का आलीशान मंदिर था। वह बिलकूल एक महल की तरह लग रहा था। अंदर जाते ही हमने उनकी मूर्ति देखी,दिवारों पर कबीर के पद लिखे हुए थे,बाहर एक तालाब था। जिस तरह की सोच कबीर जी ने रखते थे यह पूरा उसके विपरीत था। वहाँ से हम खाना खाने हॉटल गये। वहाँ पास ही दुर्गा माँ का सुंदर मंदिर था तो उस मंदिर जाकर हमने माँ के दर्शन लिया।

कबीर का घर

शाम के **4 . 00** बज रहे थे तो हम वहाँ से सीधे अस्सी घाट आरती के लिए रवाना हो गये। अस्सी घाट पहुँचते ही हम एक जगह इकट्ठा हो गये और फिर एक बड़ी सी नाव में बैठकर अस्सी घाट घूमने चले गये। अस्सी घाट के पीछे बहुत बड़ा प्राचीन इतिहास है इसका निर्माण महाराज ने करवाया था। इस घाट पर स्थित सारे मंदिर **19**वीं शताब्दी के पूर्व के है। गंगा नदी की सैर करते समय बीच में नाव को गया और नाव चलाने वाले ने हमें अस्सी घाट से जुड़ी कहानियाँ बतायी। कुल मिलाकर **84** घाट है और सभी घाट किसी ना किसी पौराणिक या धार्मिक कथा से संबधित है।

वहाँ के प्रमुख घाट है – **1** . अस्सी घाट **2** . आदि केशव घाट **3** . दशावमेध घाट **4** . पंचगंगा घाट **5** . मणिकणिका घाट

इस घाट पर दैनिक स्नानर्थियों की भीड़ लगी होती है । यहॉं पर मुंडन संस्कार,उपनयन,विवाह आदि सभी कियाएँ होती रहती है । यह घाट तथा गंगा नदी श्रध्दालुओं की आस्था व आकर्षण का प्रमुख केंद्र है ।

अस्सी घाट

जैसे ही हम मणिकर्णिका घाट के सामने जाकर रूके तो वहॉं पर हमने कई सारी पिताओं को जलते देखा । हम सब आश्चर्यचकित हो गये । फिर उस नाव चलाने वाले ने हमें इसके पीछे की कहानी बतायी,जो इस प्रकार थी । भगवान शिव और पार्वती लंबे सफर के बाद यहा स्नान के लिए रूके थे । जब पार्वती स्नान कर रही थी तब उनका कर्णफूल एक कुंड में गिर गया,भगवान शंकर ने उसे ढूंढा । माना जाता है कि पार्वती ने यह स्वंय समय बिताये । इसलिए इस घाट को मणिकर्णिका नाम पड़ा । इस घाट से जुड़ी और एक कहानी है कि माता पार्वती के पार्थिव शरीर को अग्नि संस्कार यही पर दिया गया था इसलिए इसे महा रामशान भी कहा जाता है । वहॉं पूरे **24** घंटे आज भी चितायें जलती रहती है ।

जैसे ही सूर्यास्त हुआ वैसे ही जारों – शोरों से गंगा आरती का प्रारंभ हुआ । हम सबने बड़े भक्ति भाव से आरती में भाग लिया और आरती समाप्त होने के बाद गंगा में दिये छोडकर वहॉं से निकल गये । रास्ते में हमने खाना खाया और फिर हॉटल लौत गये । उसी दिन का सफर बहुत ही लंबा होने के कारण हम थक चुके थे इसलिए हम नहा – धोकर जल्दी सो गये ।

12 फरवरी 2020

यह हमारे भ्रमण यात्रा का छठा दिन था । हम सब बहुत ही उत्सुक थे क्योंकि उस दिन हम काशी विश्वविद्यालय मंदिर जाने वाले थे जो ज्योतिर्लिंगों में से एक है । ऐसी धारणा है कि गंगा में स्नान और काशी विश्वनाथ के दर्शन लेने से मोक्ष की प्राप्ति होती है । हमें पहले से ही बताया गया था कि मंदिर जाने के लिए पुरूषों को धोती और स्त्रियों को साड़ी पहनना अनिवार्य होता है,इसलिए हम सब जल्दी उठकर तैयार होकर निकल गये। सभी लड़कियॉं साड़ी में सुंदर लग रही थी ।

जैसे ही हम मंदिर के प्रवेश व्दार के पास पहुॅंचे तो हम सबने अपना अपना सामान एक सुरक्षित जगह जमा कर दिया और हम दशन लेने अंदर गये ।

अंदर बहुत ही भीड़ थी । सभी लोग एक बड़ी सी कतार में खड़े थे और बहुत धीरे – धीरे आगे बढ़ रहे थे । हर व्दार पर सुरक्षाकर्मी दिखाई दे रहे थे । हम मंदिर के भीतर

पहुँच गये I लिंग के दाहिने भाग में भगवती विराजमान है और दूसरी ओर भगवान शिव विराजमान है I दर्शन लेने के बाद मन बहुत ही प्रसन्नता से भर गया था I

मंदिर के परिसर में और भी छोटे – मोटे मंदिर थे तो हम दर्शन लेते हुए भागे बढ़ते रहे I वहॉ अन्नपूर्णा देवी का सुंदर मंदिर था I हम अंदर गये तो हमें वहॉ प्रसादालय में भोजन परोसा गया I इतनी सुबह हमने पहली बार भोजन किया था I भोजन करके हम वहॉ से निकल बाहर जाने के रास्ते निकल गये I एक तो भीड़ बहुत भी और बाहर निकलने का रास्ता ठिक से पता भी नहीं चल रहा था I कैसे – कैसे हम बाहर पहुँच गये थे I हमने जिस जगह अपना सामान रखा था वह लेकर हम स्थान की ओर बढ़ गये I

हमारा अगला स्थान 'रामनगर किला' था जो रामनगर में स्थित गंगा के पूर्वी तट पर बसा हुआ है I इस किले का निर्माण **1750** में काशी के नरेश राज दलवंत सिंह ने किया था I इस किले के इतिहास पर गौर फरमायें तो पता चलता है कि महाभारत के काल में इसी स्थान पर रहकर वेदव्यासों ने तपस्या की थी I किले के दिवार पर **17** वीं शताब्दी के शिलालेख मिलते हैं I **18** वीं शताब्दी तक वहॉ भगवान राम के जीवन की कहानियॉ का मंचन प्रदर्शन होने लगा इसलिए वह स्थान रामनगर कहलाया गया I

रामनगर फोर्ट

दोपहर का समय था और वहॉं पर भीड़ भी काफी थी और कुछ समस्याओं के कारण हम वहॉं से हम लौट गये I रास्ते में हमने खाना खाया और पास में ही दुर्गा मॉं के मंदिर जाकर दर्शन लिए I मंदिर बहुत ही सुंदर था I

दूर्गा मंदिर

वहॉं से बी . एच . यू बस 2 किलोमीटर की दूरी पर था I पहले दिन समय की पांबदी के कारण हम 'कला भवन' नहीं देख सके तो हम 'कला भवन' देखने चले गये I

दोपहर के 3 . 00 बजे हम वहॉं पहुॅंचे I वह बहुत ही विशाल था तो हम दो समूह में बट गये I भारत कला भवन की स्थापना कलाविद पद्मभूषण 'स्वयं राय कुष्णदास' थे I इसमें लगभग 12000 विभिन्न शैलियों के चित्र संकलित है I उसी के साथ कई सारी मूर्तिया भी है I भारत कला भवन न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी लघु चित्रों के संग्रह में अपना एक मेजस रखना है I

कला भवन

वाराणसी में वह हमारा आखरी दिन था तो कला भवन से निकलते ही हम वहॉ के पास वाले बाजार शॉपिग करने चले गये । बाजार का नाम 'दालमंडी मार्केट' था । हम सभी बहुत खुश थे । शाम का समय था तो सबसे पहले हमने वहॉ 'कुल्हड चाय' का आस्वाद लिया और 3 – 4 लोगों के समूह में बैठकर खरिदारी करने निकले । ठीक 8 बजे हम शॉपिग करने के बाद एक जगह मिले । सब थक चुके थे और पेट में चूहे भी दौड रहे थे तो हम सब खाना खाने गये और फिर वापस हॉटल लौट गये । अगले दिन सुबह जल्दी उठने की झझट नहीं थी इसलिए उस रात हम सबने एकदूसरे से बहुत बातें की,खूब सारे खेल खेले और करिब 2 . 00 बजे के आसपास सो गये ।

13 फरवरी 2020

दोपहर को हम वाराणसी से बोधगया जाने के लिए निकलने वाले थे । हम सुबह थोडे देर से उठे,उसी बीच कुछ लोग पास वाले बाजार में शॉपिग करने चले गये थे । हम उठे और हमने एक ठेले पर चाय पी और थोडे बहुत घूम फिरकर हॉटल लौट आए । ठीक 12 . 00 बजे हम हॉटल से निकले और खाना खाकर 2 . 30 बजे के आसपास बस में बैठकर बोधगया के लिए निकल पड़े ।

दोपहर का समय था तो ज्यादातर लोग सो गये थे । थोड़ी देर बाद हमने बिहार में प्रवेश कर लिया था । शाम के 6 . 00 – 6 . 30 बजे के आसपास हम एक छोटे से ढाबे पर चाय पीने उतरे और फिर से सफर शुरू हुआ । थोडी देर बाद अचानक बस में एक घटना घटी । चलती बस का शीशा बीच में ही टूट गया ऐसा लगा मानो बाहर से किसी ने जानबूझकर पत्थर मारा हो । खिड़की के पास बैठी लड़की जोर से चिल्लाई,आवाज सुनते ही सब ड़र गये । भगवान की कृपा से किसी को चोट नहीं लगा थी । इस घटना के बाद मानो बस में सन्नाटा ही छा गया था ।

रात के 10 . 00 बजे के आसपास हम एक ढाबे पर रूकें । खाना खाया और फिर से सफर शुरू हुआ । करिब 1 . 30 बजे हम बोधगया पहुँचे गये । वहाँ से मंदिर तकरिबन 2 से 3 किलोमीटर की दूरी पर था जो 2 . 30 बजे खुलता था लेकिन समस्या यह थी कि वहाँ जाने के लिए हमें ऑटो का सहारा लेना पड़ता । रात का समय था तो ऑटो मिलन मुमकिन नहीं था इसलिए हमने सुबह जल्दी का फैसला किया और हम बस में ही सो गये ।

14 फरवरी 2020

सुबह 5 . 00 बजे उठकर सभी तैयार हो गये । आसपास नाश्ता करने के लिए कोई भी छोटा – मोटा हॉटल या ठेला नहीं था । इसलिए हम बिना नाश्ता किए ही वहाँ से ऑटो

में बैठकर महाबोधि मंदिर देखने निकल गये I मंदिर का परिसर बहुत ही विशाल और सुंदर था I चारो तरफ भीड़ थी और बौध्द धर्म के लोग अपने विशेष पहनावे में दिखाई दे रहे थे I

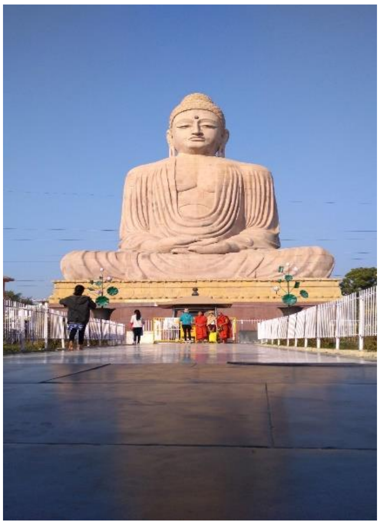

बौध्दगया

यह मंदिर भगवान बुध्द के जीवन से संबधित चार पवित्र स्थानों में से एक है जिसे विशेष रूप से आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए जाना जाता है I भगवान बुध्द ने यहाॅ ज्ञान की प्राप्ति की थी I मंदिर का परिसर सुंदर फूलो के पौधों से सजाया हुआ है I मंदिर भीतर बुध्द की बहुत बड़ी सोने की मूर्ति रखी हुई है I मंदिर के बाए तरफ चक्रमारा स्थल था जहाॅ भगवान बुध्द ने ध्यानस्थ चक्रमख करते हुए तीसरी सप्ताह बिताया था I मंदिर के चारों तरफ बोध्द धर्म के लोग ध्यान मुद्रा में बैठकर मत्रों का जाप करते हुए दिखाई दिये I वही बाजू में जगन्नाथ भगवान का मंदिर था तो हम सब वहाॅ भी हो आए I

इसी तरह हमने उस इलाके में छोटे – मोटे भगवान बुध्द के मंदिर देखे और उसी के साथ ‘द ग्रेट बुध्दा स्टेचू’ भी देखा I यह बुध्दा की मूर्ति ध्यान मुद्रा में बैठ **25** मीटर ऊॅची खुली हवा में एक कमल पर विराजमान है I यह प्रतिमा बलुआ पत्थर ब्लॉक और लाल ग्रेनाइट का एक मिश्रण है जिसे बनाने में **12000** राजमिस्त्रीओं को साल लग गए

थे। यह प्रतिमा वाकई सबका आकर्षण खीच रही थी। वह देखने के बाद हम अगले स्थान की ओर बढ़ गये।

इस पूरे भ्रमण यात्रा का आखरी स्थान जो कि नालंदा विश्वविद्यालय था जो बोधगया से 80 किलोमीटर की दूरी पर था। बीच में ही भगवान शिव का मंदिर था तो कुछ लोग वह देखने गये और हम बस में ही बैठ गये। उनके लौटने के बाद बस आगे के सफर पर निकल पड़ी।

दोपहर के करिब 2 . 30 बज रहे थे। सुबह नाश्ता न करने के कारण सभी को जोरो की भूख लग रही थी। एक हॉटल के सामन बस रौक दी गयी। सब अंदर गये लेकिन अंदर जाते ही पता चला कि इतना लोगों का खाना बनाना पड़ेगा तो उस दौरान हमने थोड़ा आराम किया। खाना तैयार होते ही सब लोग एकदम से टूट पड़े। उस खाने का स्वाद बिलकुल घर के खाने के स्वाद जैसा था। सब खुश हुए और हम नालंदा जाने की ओर बढ़ गये।

करिब 4 . 00 से 4 . 30 बजे के आसपास हम नालंदा विश्वविद्यालय पहुँच चुके थे। टिकट काउंटर पर तिकट निकाला और सब सीधे अंदर गये। हमने साथ में एक 'गाइड' रख लिया था जो हमें विश्वविद्यालय से जुड़ी हर एक छोटी – मोटी जानकारी दे रहा था।

नालन्दा विश्वविद्यालय

'नालंदा विश्वविद्यालय' दुनिया का सबसे पहला विश्वविद्यालय लय माना जाता है। इसकी स्थापना गुप्तकाल के दौरान पांचवी सदी में हुई थी लेकिन सन् 1193 में आक्रमण के बाद इसे नेस्तनाबूत कर दिया गया था । इस विश्वविद्यालय में कई देशों के छात्र पढ़ते आते थे करिब 10000 जो कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों के अलावा कोरिया,चीन,तिब्बत,इंडोनिशिया,फारस और तुर्की से थे । पूरे विश्वविद्यालय में 300 कमरे,7 बड़े –बड़े कक्षा, 9 मंजिला विशाल पुस्तकालय था जिसमें 300000 से भी अधिक किताबें थी । विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने के लिए तीन कठिन परीक्षा स्तरों से गुजरना पड़ता था तो केवल प्रतिभाशाली छात्र ही इसमें प्रवेश ले पाते थे । 9 वीं से 12 वीं शताब्दी तक इसे आंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त थी लेकिन अब यह एक खंडर बनकर रह चुका है । सन् 1199 में तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने इस विश्वविद्यालय को जलाकर पूरी तरह नष्ट कर दिया था ।

पूरा विश्वविद्यालय देखने के बाद हमने वहॉ पर तस्वीरे ली,बाहर कुछ दुकानें लगी हुई थी तो छोटी – मोटी खरिददारी की और वहॉ से पटना की ओर रवाना हुए । रास्ते में बहुत भीड़ होने कारण हमें हॉटल तक पहॅुचते – पहॅुचते बहुत देर हो गयी थी । सभी लोग बहुत थक चुके थे । करिब 11 . 30 बजे के आसपास हम हॉटल पहॅुच चुके थे । लोग नहा – धोकर खाना खाकर सो गये ।

15 फरवरी 2020

हमारी यात्रा का यह अंतिम दिन था । हम सुबह जल्दी उठकर अपने – अपने दोस्तों के साथ बाजार घूमने चले गये । सबसे पहले हमने नाश्ता किया और घर ले जाने के लिए वहॉ की मशहूर मिठाई खरिदी । सुबह का समय था तो ज्यादातर दुकानें खुली नहीं थी तो हमें ठीक से शॉपिंग करने नहीं मिली बाजार से लौटकर हमने अपना – अपना सामान पैक कर दिया और हम पटना स्टेशन पर गये । वहॉ से हम 1 . 00 बजे की ट्रेन 'पटना एक्सप्रेस' में बैठकर वापस गोवा अपने – अपने घर जाने निकल पड़े ।

सभी लोग अलग – अलग कंपार्टमेंट में तो सब एक – दूसरे से मिल रहे थे,अंताक्षरी खेल रहे थे l शाम के समय हमने चाय पी और भ्रमण की यादों को याद कर रहें थे l रात के समय सभी ने खाना खाया और सो गये l

19 फरवरी 2020

हम सुबह उठे और हमने नाश्ता किया l ट्रेन में यह हमारी आखिर दिन था तो हम सबने सोचा था कि हम जितना हो सकें उतने ये पल जायेगे l हम सब जैसे ही एक कॅबिन में बैठते जोरों – शोरों से अंताक्षरी खेलते,बातें करते समय बिता रहे थे l मन में बस यही विचार चल रहा था कि 'कौन जाने फिर कब दोस्तों के साथ ऐसे आना होगा ? लेकिन हम एक दूसरें को अपनी उदासी नहीं दिखा रहे थे बल्कि हॅसी मजाक के साथ समय बिता रहे थे l

दोपहर का समय था तो सबने खाना खाया और सो गये l जैसे ही मैं उठी तो शाम के 6 . 00 बज रहे थे हमने चाय का आस्वाद लिया और फिर से अंताक्षरी खेलना प्रारंभ

किया मानो ऐसा लग रहा था कि गोवा पहुँचते तक हम ऐसे गाने गाने रहेंगे l कॉलेज के प्रति दिन के दिनचर्या में हम एक – दूसरे को कभी इतना नहीं जान सकें थे जितना उन 9 दिवसीय यात्रा में जान पायें l एक दूसरे के साथ एक गहरा रिश्ता बन चुका जो कभी भुलाया नहीं जा सकता था l बहुत खूबसूरत सी यादें बन चुकी थी जो हमेशा ऐसे ही साथ रहती l इन विचारों के साथ एक गाने की पंक्ति याद आ रही थी जो थी 'जिन्दगी एक सफर है सुहाना,यहॉ कल क्या हो किसने जाना' और इसी के साथ मैं फिरसे दोस्तों के साथ बातें करने में घुल गयी l

रात के 8 . 00 बज रहे थे l हमने खाना ऑर्डर किया था तो जैसे ही हमें खाना मिला तो सबने एक दूसरे के साथ बांटकर,एक दूसरे को खिलाते हुए खाने का आस्वाद लिया l रेल में भीड़ थी तो हर तरह से आवाजें आ रही थी फिर भी वह सफर बहुत ही सुखमय लग रहा था l रात के 12 . 00 बज रहे थे पर कोई भी सोने का नाम नहीं ले रहा था क्योंकि अगली सुबह हम गोवा पहुँचने वाले थे l हमने ढेर सारी बातें की,थोडी बहुत शरारतें भी की और पता नहीं कब हमारी ऑख लग गयी l

सुबह 6 . 00 बजे के आसपास हम उठे l सब बहुत ही उदास थे क्योंकि अब जाकर हम बिछड़ने वाले थे लेकिन घर की खुशी भी कुछ कम नहीं थी l सबसे पहले हम थिविम स्टेशन उतरने वाले थे और बाकी आधे लोग मडगॉव स्टेशन तो जैसे ही हम थिविम स्टेशन पहुँचे अंतिम विदाई के समय सभी की ऑखे नम हो गयी थी l हम उतरे और बाकियों को विदा करते हुए अपने - अपने घर लौटे l इस तरह ना चाहते हुए भी सुनहरी यादों के साथ 'सफर – ए – बनारस तथा पटना' की यात्रा का समापन हुआ l

निष्कर्ष

साहित्य को पढ़ते हुए हमे साहित्य से जुडे उन सारे प्रदेशों का भ्रमण करना बहुत ही आवश्यक है। हिंदी साहित्य क्या है? उसकी शुरूआत कहा से हुई? उस साहित्य से जुड़े हर एक अंश के बारे में हमें पता होना अनिवार्य होता है तभी जाकर हम उससे जुड़ पाते है। इस भ्रमण यात्रा का मुख्य उद्देश्य भी यही था कि हम उन प्रदेशों में जाकर वहॉ के परिवेश,वहॉ की संस्कृति को प्रत्यक्ष देखे और महसूस करें ताकि इससे हमें आगे जीवन में फायदा हो सकें।

हमारा हिंदी साहित्य बहुत ही व्यापक है तथा इसे जानना और समझना उतना ही कठीन है। हिंदी के प्रमुख साहित्यकार संत कबीर तथा प्रेमचंद जी को उनके साहित्य के माध्यम से जानते थे लेकिन प्रत्यक्ष उनके जन्मस्थान पर जाकर वहॉ के परिवेश को अनुभव किया तथा और गहराई के साथ उनके बारे में जान सकें। उसी प्रकार हम अगर बनारस पर गौर फरमायें तो वहॉ की संस्कृति बहुत ही अलग है। एक भीड़ भाड़ वाली जगह जहॉ कदम कदम पर कई सारी आस्थाओं से जुड़े मंदिर देखने मिलते है। यह शहर साहित्य,कला एवं संगीत के लिए प्रख्यात है। एक धार्मिक शहर होने के कारण यहॉ हर साल सेकड़ो भक्तगण आते है। वहॉ की हर एक गली अपना एक अलग ही पेश करती है। उन गलियों में घूमना हम जैसे लोगों के लिए आसान नहीं है। जो भी साहित्य में लिखा जाता है तथा चित्रण किया जाता है उसका अनुभव हम प्रत्यक्ष उस जगह जाकर ही ले सकते है। जिस उद्देश्य को हमें हासिल करना या वह हमने इस 'सफर – शहर – ए बनारस तथा पटना का'इस यात्रा के माध्यम से हासिल किया।

एक बहुत ही मशहूर कहावत है, "कोस कोस पर बदले पानी और चार कोस पर वाणी" इसका अर्थ यही होता है कि कोस – कोस पर परिवेश तथा संस्कृति बदलती रहती है तो इसलिए इसके बारें में जानना तथा उसका सम्मान करना हर एक साहित्य से जुड़े विद्यार्थी को आना चाहिए। किसी ने सोचा ही कहा है कि,जितना हम प्रकृति के

करीब रहते है,उतना ही संस्कृति से,अपनी जड़ो से जुड़े होते हैं और जितना हम प्रकृति से कहते हैं,उतना ही हम खुद से और अपनी संस्कृति से भी दूर होते जाते है ।” इन सारी बातों का सही मायनों में अनुभव तथा इसका अर्थ इस पूरे ‘सफर ए बनारस तथा पटना के माध्यम से समझा ।

नाम ः क्षितिजा देविदास पेडणेकर

आसनक्रमांक ः 14

कक्षा ः स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष

विषय ः हिन्दी प्रदेशों में भ्रमण